बुकर टी. वाशिंगटन

विलियम वाइज़

चित्र: पॉल फ्रेम

बुकर टी. वाशिंगटन

गृहयुद्ध से पहले, अमरीका के दक्षिण में नीग्रो गुलाम थे. बुकर टी. वाशिंगटन को उस गोरे व्यक्ति के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी जो उसका मालिक था. युद्ध के बाद, बुकर रात में स्कूल जा सकता था. वे एक शिक्षक बने ताकि वो अन्य नीग्रो लोगों को पढ़ा सकें. बाद में, वे अमेरिका के पहले स्कूल के प्रधानाचार्य बने जिसे नीग्रो लोग स्वयं चलाते थे. यह आसानी से पढ़ी जा सकने वाली जीवनी एक ऐसे महान व्यक्ति के बारे में है जो एक गुलाम के रूप में पैदा हुआ था पर जिसने अपने लोगों को गुलामी से मुक्त कराने में मदद की.

बुकर टी. वाशिंगटन

विलियम वाइज़

चित्र: पॉल फ़्रेम

बुकर टी. वाशिंगटन

बुकर टी. वाशिंगटन का जन्म 1858 में वर्जीनिया में हुआ था.

उन्होंने अपने पिता को कभी नहीं जाना. वे अपनी माँ, एक बड़े भाई और एक बहन के साथ रहते थे. उनका घर एक बागान में एक छोटा सा एक कमरे का केबिन था.

बुकर और उसका परिवार गुलाम थे. उस बागान का मालिक एक गोरा आदमी था. 1858 में अमरीका के दक्षिण में कई नीग्रो गुलाम थे. अमरीका के उत्तर में रहने वाले नीग्रो आज़ाद थे.

बुकर और उसके परिवार के लिए रहना आसान या सुखद नहीं था. सर्दियों में उनका छोटा केबिन बहुत ठंडा हो जाता था. गर्मियों में वहां कड़ी गर्मी पड़ती थी.

केबिन में कोई बिस्तर नहीं था. रात में बुकर और उसका परिवार केबिन के फर्श पर ही सोते थे.

बागान के सभी गुलामों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी. जैसे ही वह बड़ा है, बुकर को भी कड़ी मेहनत करनी पड़ी.

कभी-कभी वह एक बाल्टी पानी से भरता था. वह उस भारी को बाल्टी खेतों में काम कर रहे मज़दूरों के पास लेकर जाता था.

कभी-कभी वह पीसने के लिए मक्का को चक्की ले जाता था. चक्की बागान से तीन मील दूर थी. जब तक वह चक्की से वापस आता, तब तक अंधेरा हो जाता था.

बुकर को अँधेरे जंगल में अकेले साइकिल चलाने में डर लगता था. लेकिन उसे ऐसा करना ही पड़ता था. बागान वापस जाने का कोई और तरीका नहीं था.

बागान मालिक की एक छोटी बच्ची थी जो स्कूल जाती थी. एक दिन बुकर को उसकी किताबें उठाकर ले जाने को कहा गया. जब वे स्कूल पहुँचे, तो बच्ची अंदर क्लास में चली गई.

बुकर को बाहर रुकना पड़ा. दक्षिण में, नीग्रो बच्चे स्कूल नहीं जा सकते थे. इस वजह से, दक्षिण के ज़्यादातर नीग्रो पढ़ना नहीं जानते थे. कई तो अपना नाम तक नहीं लिख पाते थे.

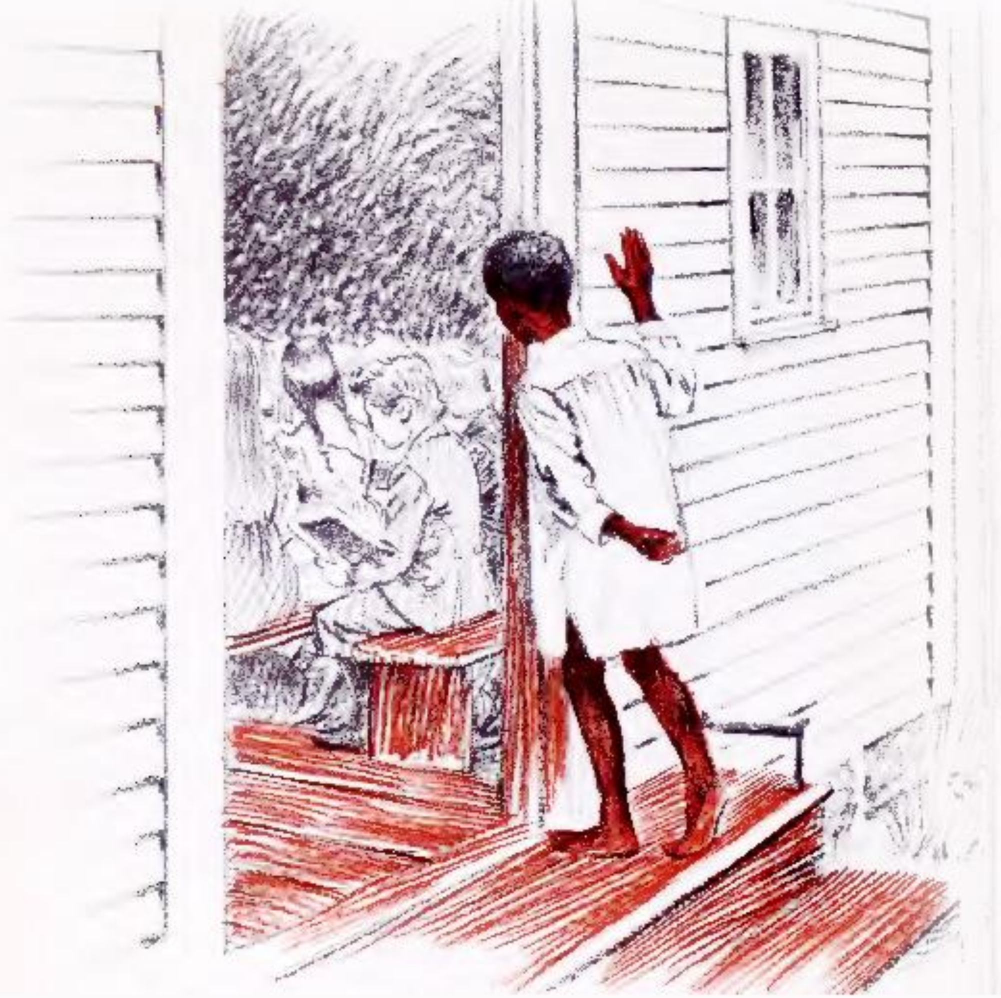

बुकर दरवाज़े के पास खड़ा होकर अंदर देखने लगा. उसने उस छोटी बच्ची और दूसरे गोरे बच्चों को अपना स्कूल का काम करते देखा.

उस दिन से, वह स्कूल जाना चाहता था.

वह भी पढ़ना-लिखना सीखना चाहता था.

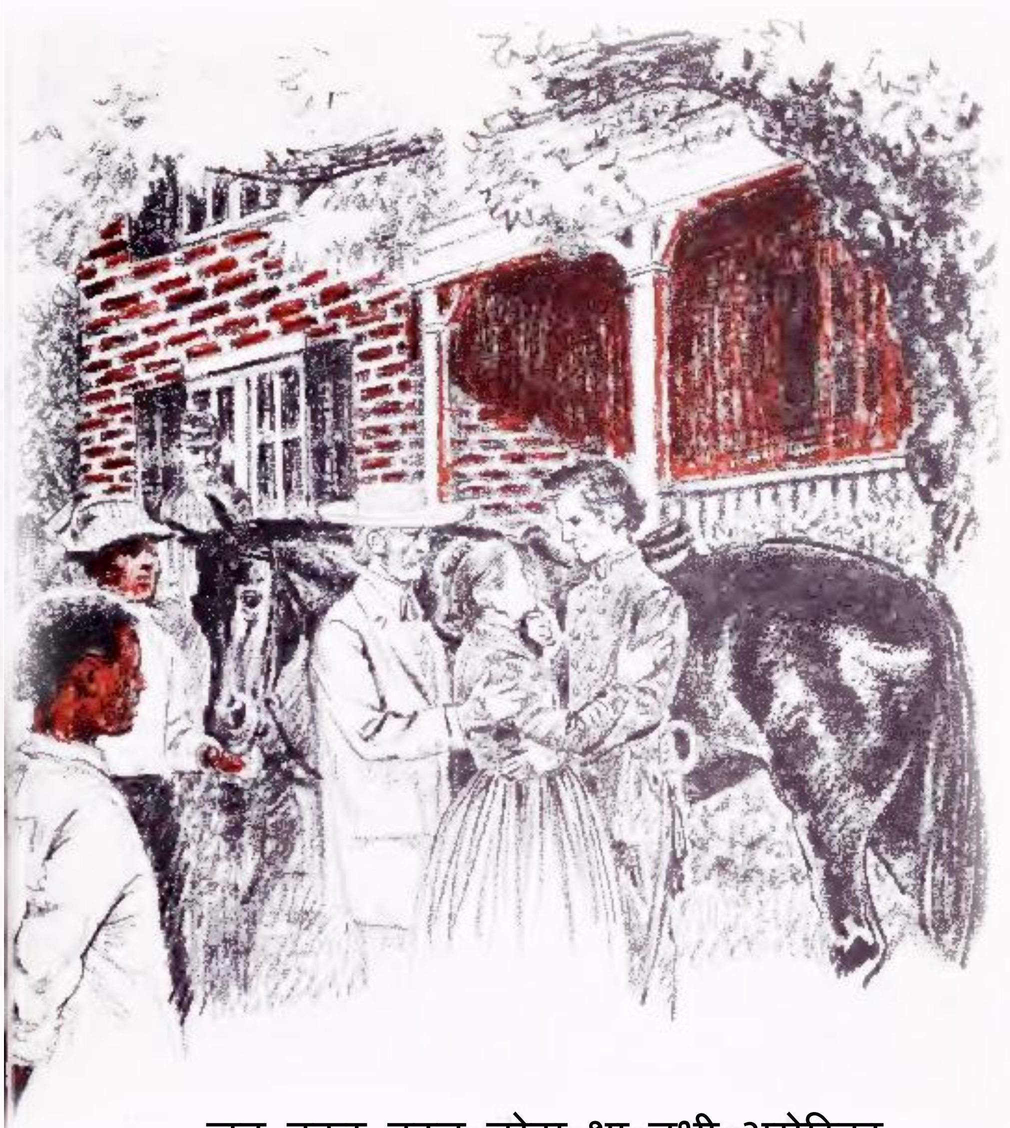

जब बुकर बहुत छोटा था, तभी अमेरिका में गृहयुद्ध शुरू हो गया था.

लोग कई कारणों से युद्ध लड़ते हैं. उत्तर और दक्षिण के पास गृहयुद्ध लड़ने के कई कारण थे.

एक कारण यह था कि उत्तरी राज्य, अमेरिका में नीग्रो लोगों को आज़ाद करना चाहते थे. वे गुलामी को ख़त्म करना चाहते थे.

दक्षिणी राज्य गुलामों को रखना चाहते थे.

और इस कारणवश चार भयानक वर्षों तक युद्ध चलता रहा.

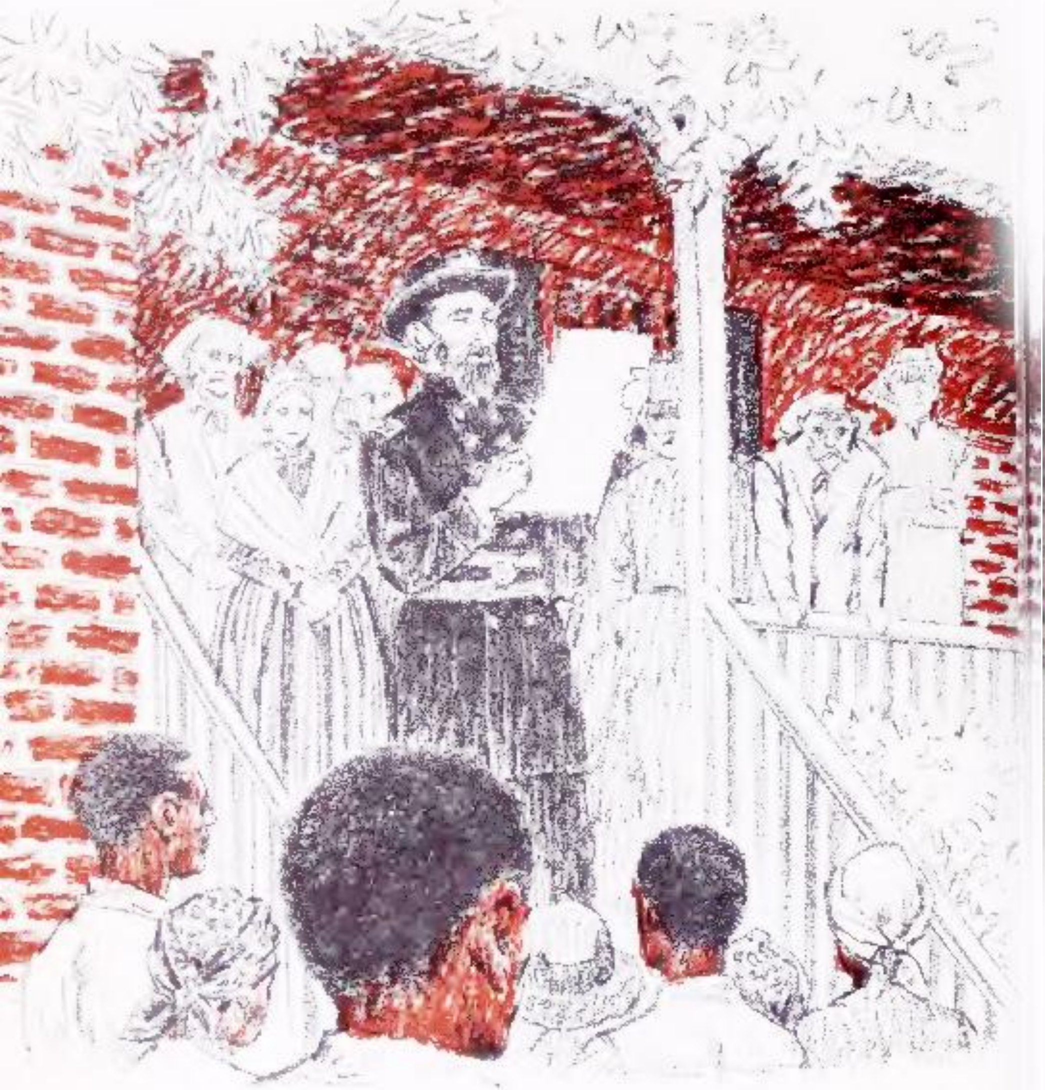

एक सुबह, जब बुकर सात साल का था, बागान के सभी गुलामों को काम पर से बुलाया गया. वे उस घर में गए जहाँ बागान मालिक रहता था.

बागान मालिक ने कहा कि युद्ध समाप्त हो गया है. उत्तर जीत गया है.

उत्तर का एक सैनिक वहाँ था. उसने एक लंबा पर्चा पढ़ा. वो राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा लिखा मुक्ति का घोषणा पत्र था.

मुक्ति की घोषणा में कहा गया था कि अमेरिका में फिर कभी गुलामी नहीं होगी.

कोई भी पुरुष, स्त्री या बच्चा फिर कभी किसी और का गुलाम नहीं होगा. दक्षिण के नीग्रो अब स्वतंत्र थे.

थोड़ी देर के लिए बागान के सभी नीग्रो बहुत खुश हुए. बुकर की माँ ने कहा कि यही वह दिन था जिसे वह हमेशा से देखना चाहती थी. वह बहुत खुश थी इसलिए वह रो पड़ी.

लेकिन जल्द ही बुकर और उसका परिवार उदास हो गया. उन्हें पता था कि उनकी परेशानियाँ अभी खत्म नहीं हुई हैं. अब, क्योंकि वे स्वतंत्र थे, उन्हें उन चीजों के बारे में सोचना था जिनके बारे में उन्होंने पहले कभी नहीं सोचा था.

अब उन्हें सोचना था कि वे कहाँ रहेंगे.

अब उन्हें सोचना था कि वे क्या काम करेंगे.

उन्हें अपना खाना और कपड़े खरीदने के लिए पैसे की ज़रूरत होगी. उन्हें बाकी सब चीज़ें खरीदने के लिए पैसे की ज़रूरत होगी जो स्वतंत्र लोगों को अपने लिए खरीदनी होती हैं.

समय के साथ, बुकर की माँ को पता चला कि वेस्ट वर्जीनिया में उन्हें काम मिल सकता था. उन्होंने अपनी थोड़ी-बहुत चीज़ें एक गाड़ी में डालीं. फिर उन्होंने गाड़ी से एक खच्चर बाँधा. फिर वे पहाड़ों के ऊपर से गुज़रने वाली सड़क पर चलने लगे.

यह बहुत लंबी यात्रा थी. बुकर ज़्यादातर रास्ते, गाड़ी के साथ-साथ चला.

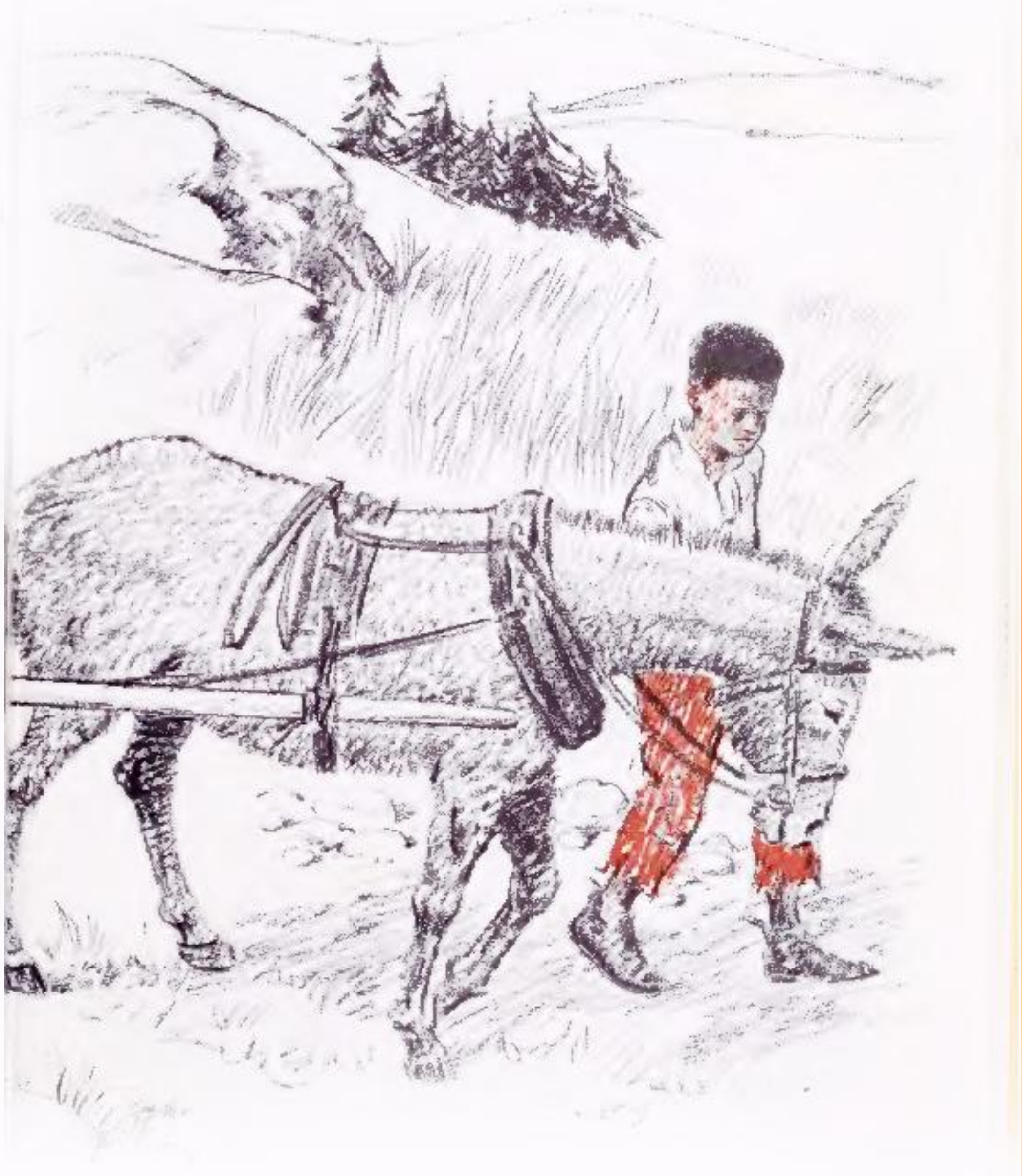

जब वे वेस्ट वर्जीनिया पहुँचे, तो बुकर को एक कोयला खदान में काम मिल गया. खदान बहुत अँधेरी थी. खदान बहुत गंदी थी.

एक बच्चे के लिए यह बहुत मुश्किल काम था. लेकिन बुकर जानता था कि उसकी माँ को उसकी मज़दूरी के सारे पैसे चाहिए थे. इस वजह से, बुकर सुबह से शाम तक कोयला खदान में काम करता था.

हालाँकि, बुकर अभी भी स्कूल जाना चाहता था. उसकी माँ भी चाहती थी कि वह स्कूल जाए. इसलिए वह रात में, कोयला खदान में काम खत्म होने के बाद ही स्कूल जाता था.

स्कूल में सिर्फ़ एक शिक्षक था.

स्कूल में सिर्फ़ दो या तीन किताबें थीं.

Some of the students were children

वहां कुछ बच्चे थे. छात्र वे लड़के-लड़कियां थे जो पहले कभी स्कूल नहीं जा पाए थे.

बुकर ने उस छोटे से स्कूल में उससे जितना हो सका उतना सीखा. फिर, एक दोपहर, उसने कोयले की खदान में दो आदमियों को बातें करते सुना. वे वर्जीनिया के एक बड़े स्कूल, हैम्पटन इंस्टीट्यूट, के बारे में बात कर रहे थे.

उन आदमियों ने कहा कि हैम्पटन इंस्टीट्यूट सिर्फ नीग्रो बच्चों के लिए था. बुकर जैसा गरीब लड़का वहाँ जा सकता था. वह वहाँ पर स्थानीय स्कूल से कहीं ज़्यादा सीख सकता था.

उस रात बुकर ने जो कुछ सुना था वो अपनी माँ को बताया. उसने कहा कि वह हैम्पटन इंस्टीट्यूट जाना चाहता था, हालाँकि वह बहुत दूर था.

दो साल तक बुकर ने जितना हो सका, उतना पैसा जमा किया. उसके परिवार ने उसकी मदद करने की कोशिश की. शहर के दूसरे नीग्रो लोगों ने भी उसकी कुछ मदद की. उन्होंने उसे थोड़े-थोड़े पैसे दिए. उन लोगों के पास देने के लिए बस उतने ही पैसा थे.

आखिरकार घर छोड़ने का समय आ गया. उसने अपने दोस्तों और परिवार को अलविदा कहा. उसकी माँ बूढ़ी और बीमार थीं. बुकर को नहीं पता था कि वह अपनी माँ को फिर कभी देख पाएगा या नहीं.

उसने यात्रा का पहला भाग स्टेजकोच से तय किया. पहाड़ों की एक बेहद ठंडी रात में, स्टेजकोच एक छोटे से होटल में रुका. होटल मालिक ने बुकर को कमरा देने से मना कर दिया. उसने कहा कि कोई भी नीग्रो उसके होटल में नहीं सो सकता था.

बुकर सारी रात बाहर घूमता रहा, खुद को गर्म रखने की कोशिश करता रहा. उसने पहले सुना था कि अमेरिका में कुछ गोरे लोग नीग्रो से सिर्फ़ नफ़रत करते थे. लेकिन यह पहली बार था जब वो ऐसी नफ़रत का आमना-सामना कर रहा था.

पहाड़ों को पार करने के बाद, बुकर रिचमंड जाने वाली ट्रेन में सवार हुआ. जब वह शहर पहुँचा, तो उसके पास बिल्कुल पैसे नहीं बचे थे.

वह शहर में घूमने लगा. एक दुकान की खिड़की में उसने कुछ खूबसूरत सेब के केक देखे. लेकिन उसके पास वो खरीदने के लिए पैसे नहीं थे.

अँधेरा होते-होते, वह एक नीची लकड़ी के पुल के पास पहुँचा. थका हुआ और भूखा, वह पुल के नीचे रेंगता हुआ गया. सोते समय उसने जो आखिरी चीज़ सुनी, वह उसके सिर के ऊपर लकड़ी के पुल पर लोगों के चलने की आवाज़ थी.

अगले दिन उसने पानी के किनारे एक जहाज़ देखा. कप्तान ने कहा कि उसे जहाज़ पर भारी बक्से ढोने का काम मिल सकता था.

बुकर ने एक हफ़्ते तक इसी तरह काम किया. पैसे बचाने के लिए, वह हर रात उसी लकड़ी के पुल के नीचे सोता था. हफ़्ते के अंत तक उसने हैम्पटन इंस्टीट्यूट जाने के लिए ट्रेन से जाने लायक पैसे जमा कर लिए थे.

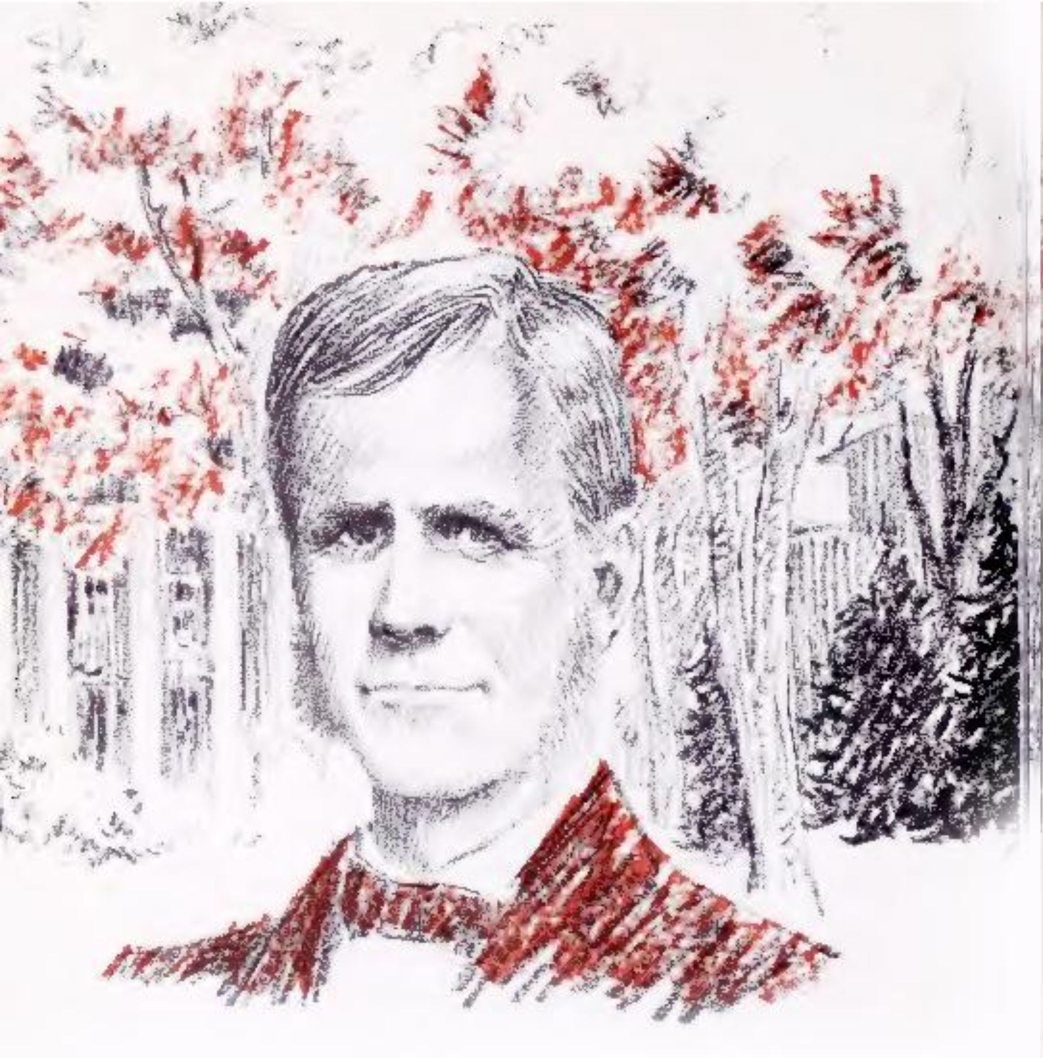

हैम्पटन संस्थान का संचालन जनरल सैमुअल सी. आर्मस्ट्रांग करते थे. गृहयुद्ध के दौरान जनरल उत्तरी क्षेत्र के सैनिक थे. अब वे दक्षिण के श्वेत और नीग्रो लोगों की यथासंभव मदद करना चाहते थे.

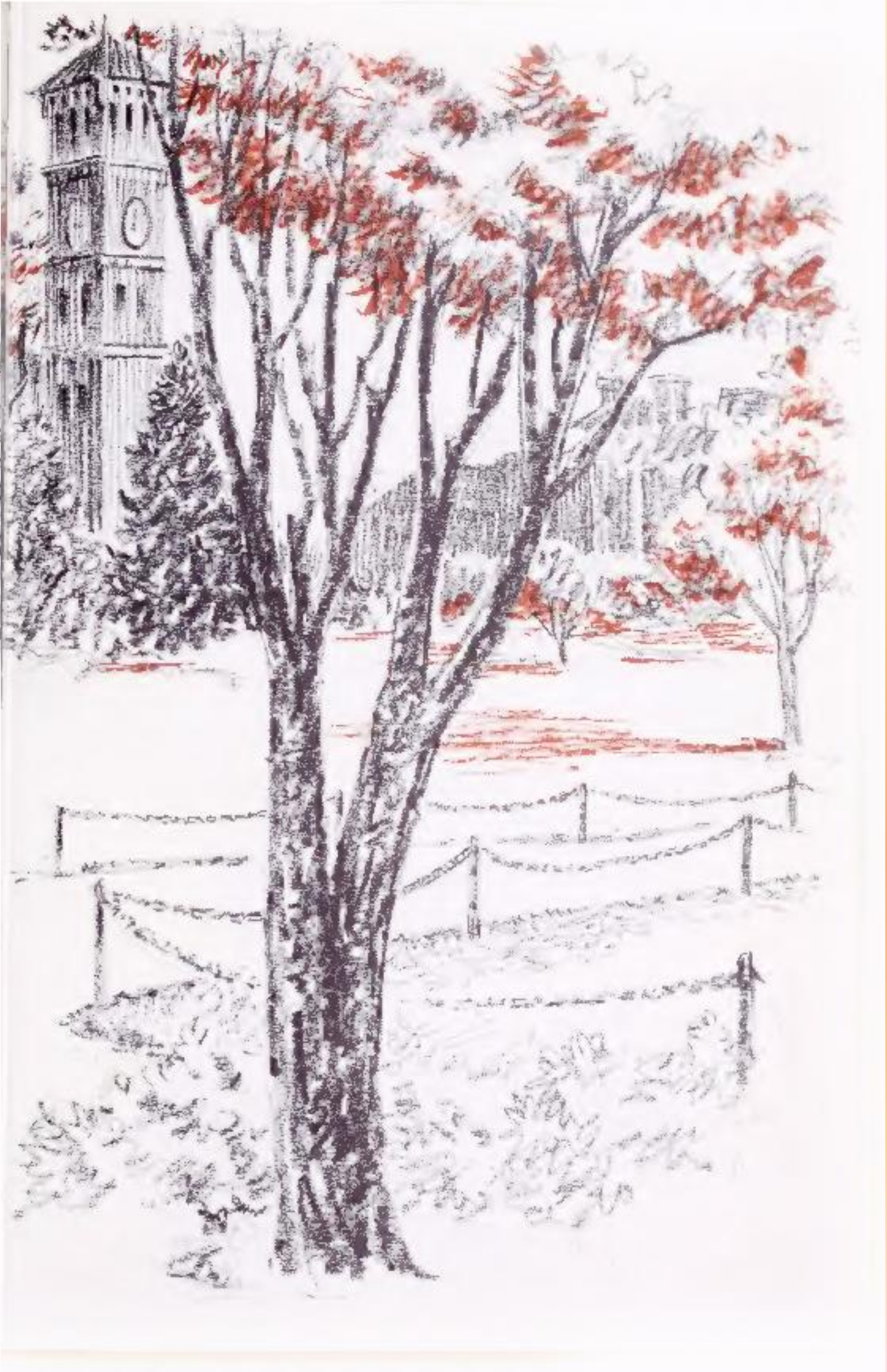

बुकर टी. वाशिंगटन तीन साल तक हैम्पटन में रहे. उन्होंने कठिन किताबें पढ़ना सीखीं. उन्होंने दूसरों के सामने अच्छी तरह बोलना और अपनी बात उन्हें सुनाना सीखा.

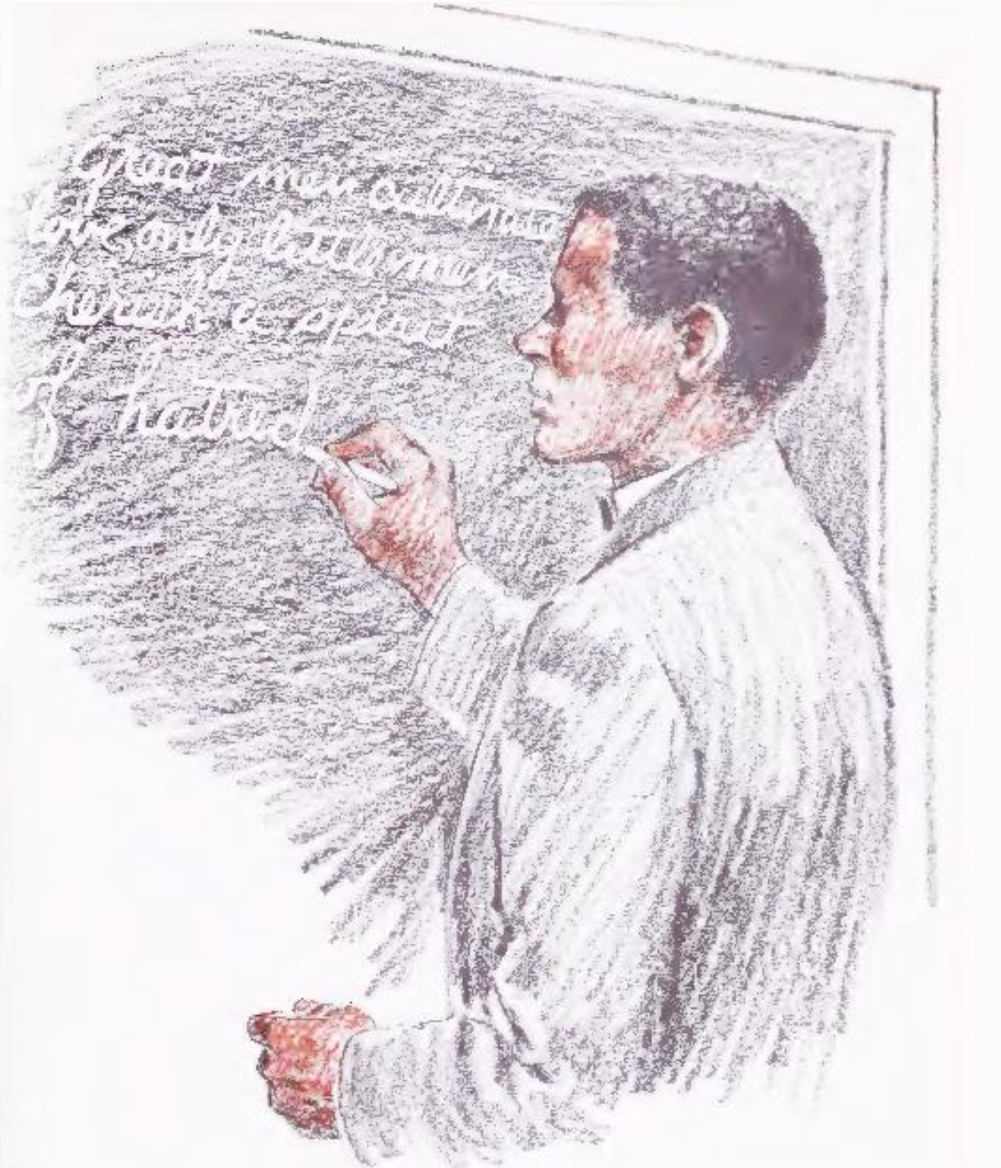

हैम्पटन में उन्होंने एक और चीज़ सीखी. वो एक शिक्षक बनेंगे और अन्य नीग्रो लोगों को दुनिया में एक बेहतर जगह पाने में मदद करेंगे.

दो साल तक उन्होंने वेस्ट वर्जीनिया में एक स्कूल शिक्षक के रूप में काम किया. फिर जनरल आर्मस्ट्रांग ने उन्हें हैम्पटन वापस आने और वहाँ का रात्रि विद्यालय चलाने को कहा.

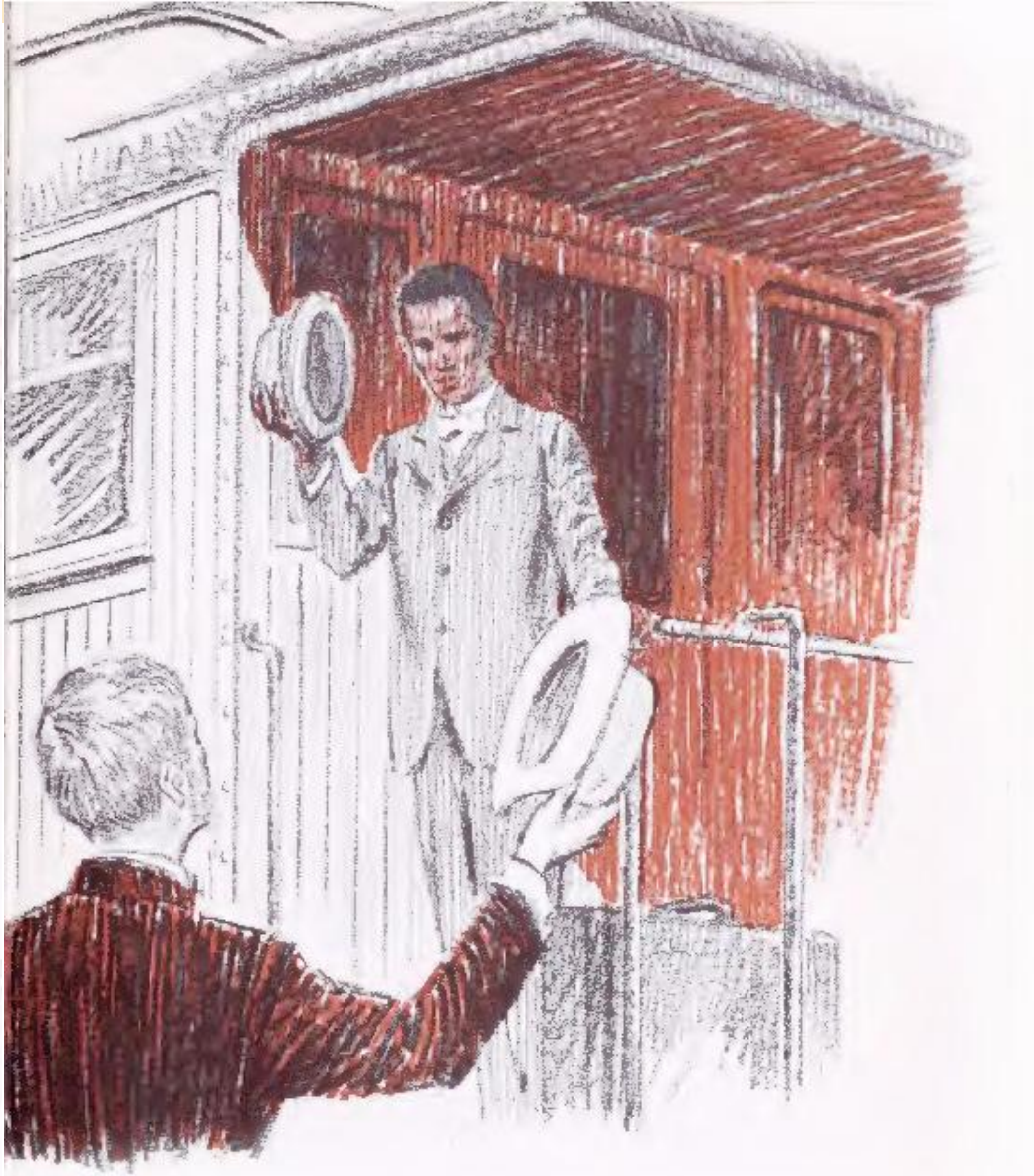

जनरल ने कहा कि वे अपने सबसे अच्छे शिक्षकों में से एक को भेजेंगे. उन्होंने बुकर टी. वाशिंगटन को भेजा.

एक दिन जनरल के लिए एक पत्र आया. इसमें कहा गया था कि अलबामा के टस्केगी में नीग्रो लोगों के लिए एक नया स्कूल खुलने वाला है. क्या जनरल मदद करेंगे? क्या वे हैम्पटन से अपने किसी शिक्षक को नए स्कूल का प्रमुख नियुक्त करेंगे?

जनरल ने कहा कि वे अपने सबसे अच्छे शिक्षकों में से एक को भेजेंगे. उन्होंने बुकर टी. वाशिंगटन को वहां भेजा.

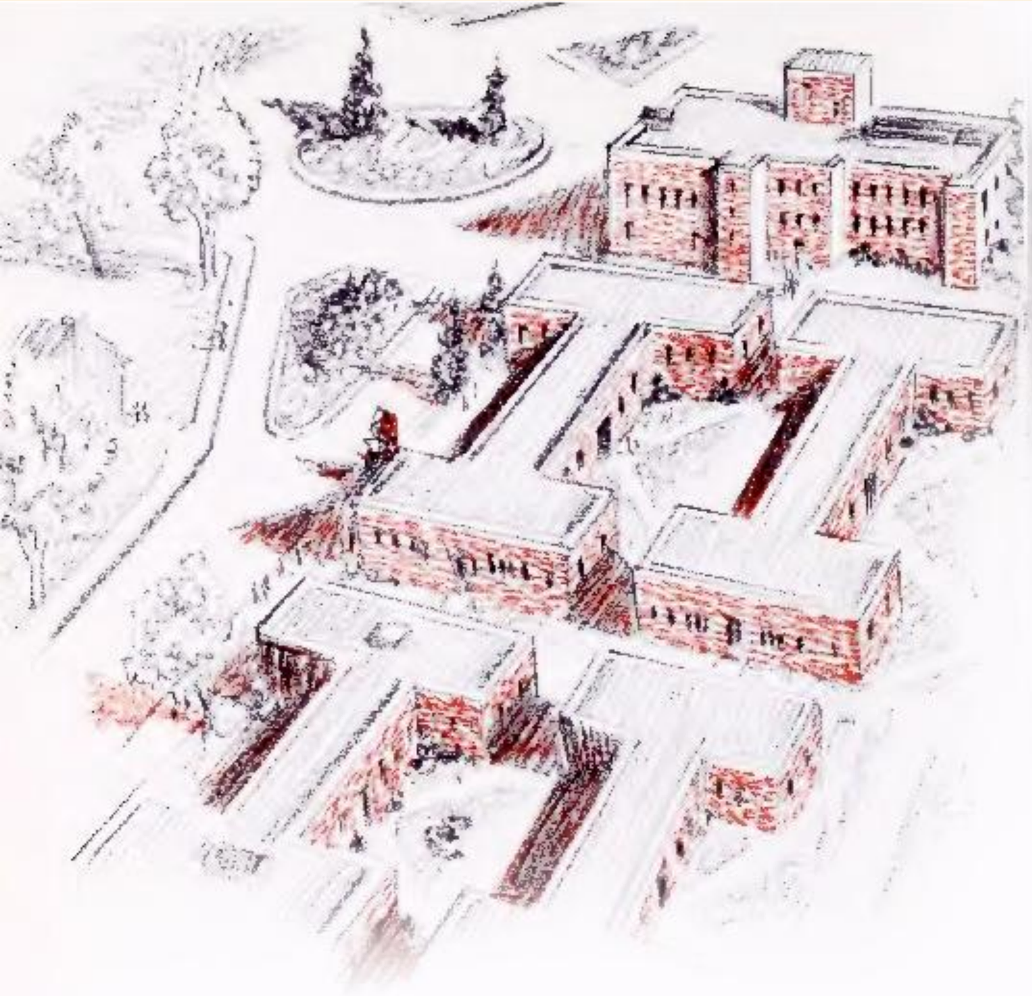

अपने अंतिम दिनों तक बुकर टी. वाशिंगटन टस्केगी स्कूल के प्रमुख रहे. टस्केगी संस्थान बहुत प्रसिद्ध हो गई. वो अमेरिका का पहला महान स्कूल था जिसे नीग्रो लोग स्वयं चलाते थे.

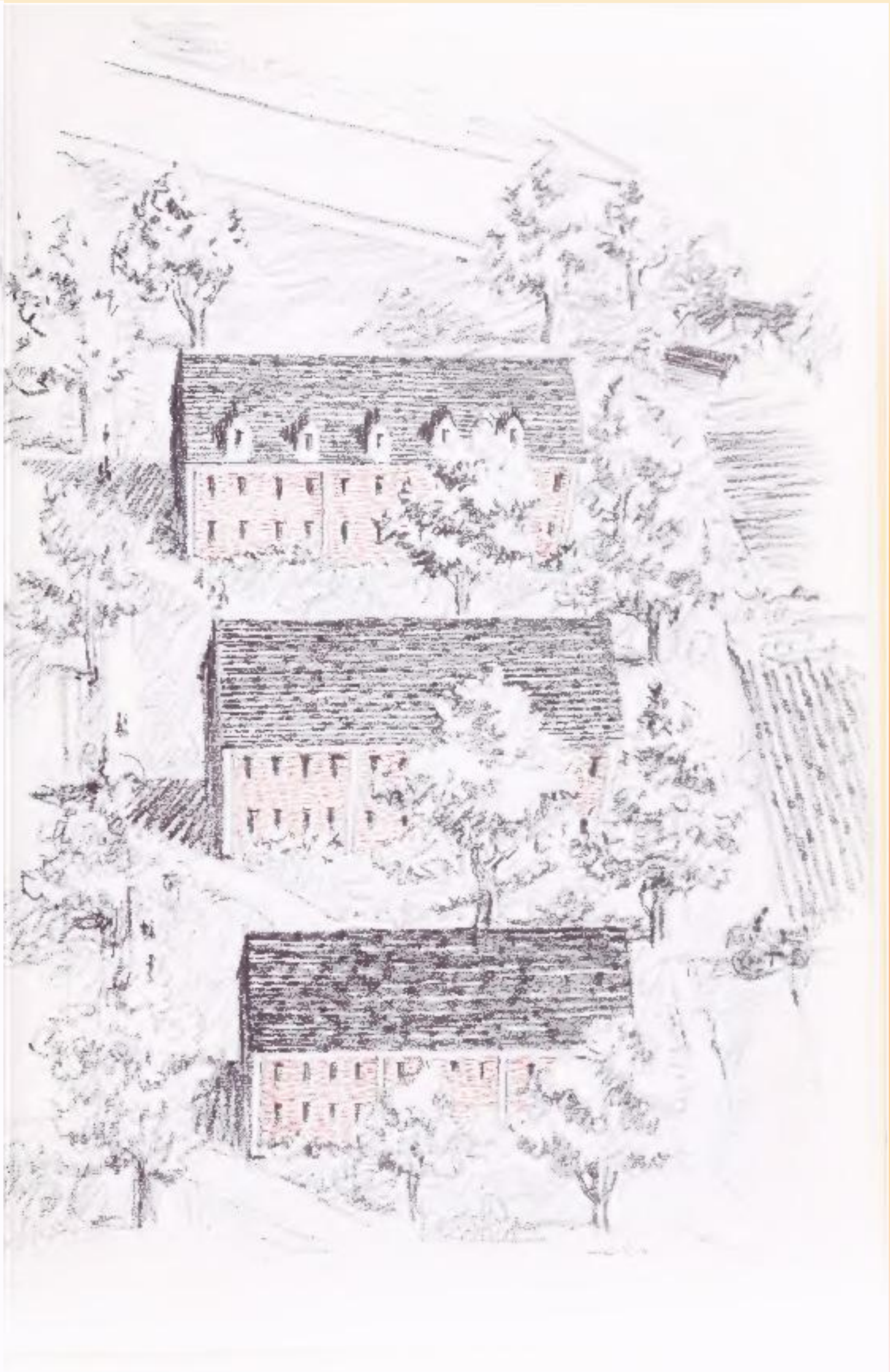

टस्केगी के छात्रों ने किताबों से बहुत कुछ सीखा.

उन्होंने अपने घरों के लिए मेज़, कुर्सियाँ और बिस्तर भी बनाना सीखा.

उन्होंने खेतीबाड़ी करना सीखा. उन्होंने सीखा कि उन्हें क्या खाना चाहिए ताकि वे मज़बूत और फिट रहें.

और उन्होंने कुछ और भी सीखा. उन्होंने स्कूल और खुद पर गर्व करना सीखा.

टस्केगी संस्थान का प्रमुख बनना कोई आसान काम नहीं था. स्कूल हमेशा गरीब रहा. बुकर टी. वाशिंगटन को बार-बार कहीं न कहीं से पैसे जुटाने पड़े.

वो टस्केगी की कहानी सुनाने उत्तर गए. उन्होंने कहानी इतनी खूबसूरती से सुनाई कि कई अमीर पुरुषों और महिलाओं ने उन्हें स्कूल के लिए पैसे दिए.

जैसे-जैसे साल बीतते गए, टस्केगी संस्थान पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो गई. बुकर टी. वाशिंगटन भी प्रसिद्ध हो गए.

उत्तर और दक्षिण दोनों में उनके कई दोस्त थे. एक बसंत में उनके कुछ दोस्तों ने देखा कि अब बुकर थक गए थे. उन्होंने कहा कि उन्हें आराम की ज़रूरत थी. उन्होंने उन्हें एक टिकट दिया और जहाज़ से यूरोप भेज दिया. लगभग बीस सालों में बुकर को पहली बार आराम मिला.

वह जहाँ भी जाते, लोग उनसे मिलना चाहते थे. सब लोग उस व्यक्ति से मिलना चाहते थे जो एक गुलाम पैदा हुआ था और जो अब इतना प्रसिद्ध हो गया था.

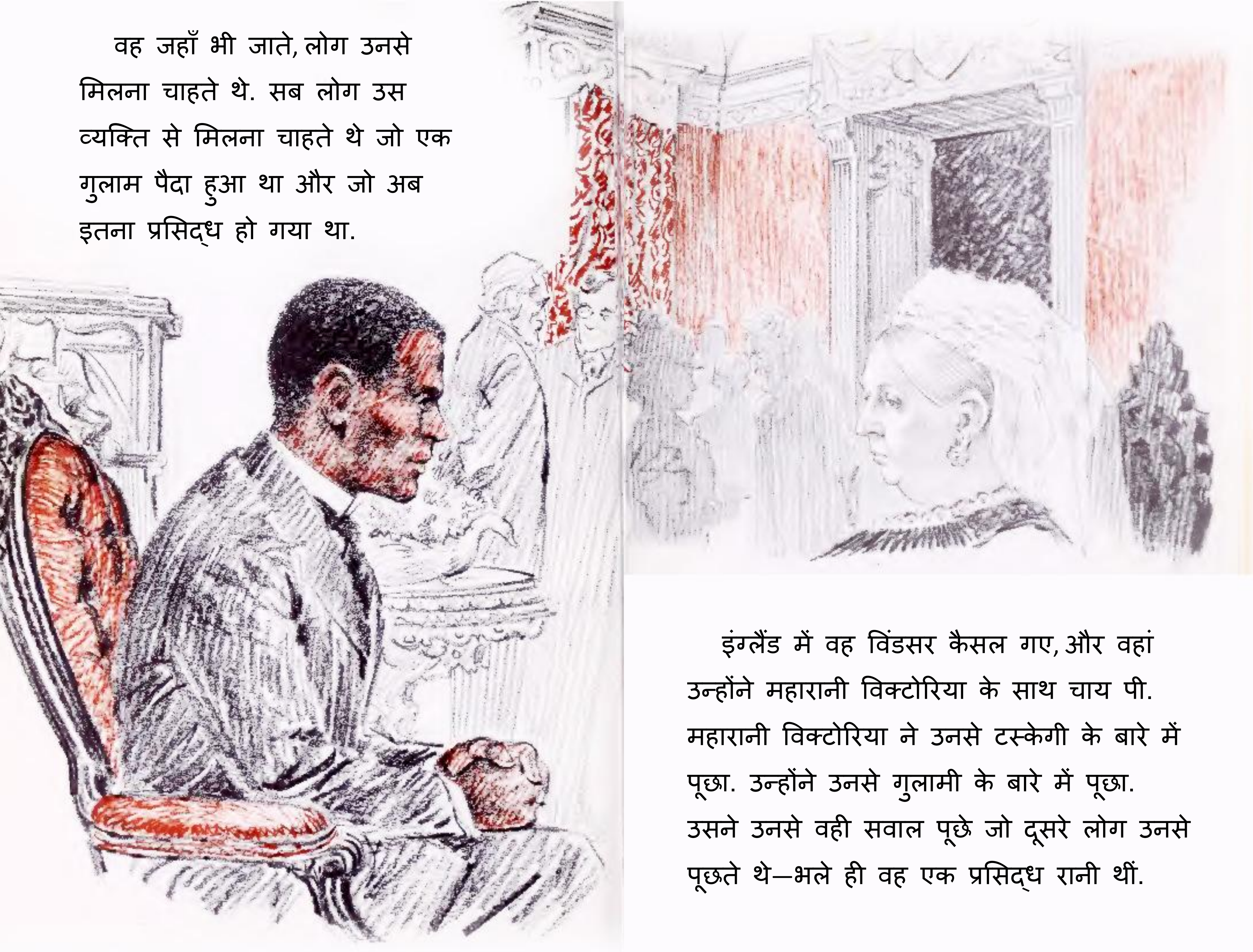

इंग्लैंड में वह विंडसर कैसल गए, और वहां उन्होंने महारानी विक्टोरिया के साथ चाय पी. महारानी विक्टोरिया ने उनसे टस्केगी के बारे में पूछा. उन्होंने उनसे गुलामी के बारे में पूछा. उसने उनसे वही सवाल पूछे जो दूसरे लोग उनसे पूछते थे—भले ही वह एक प्रसिद्ध रानी थीं.

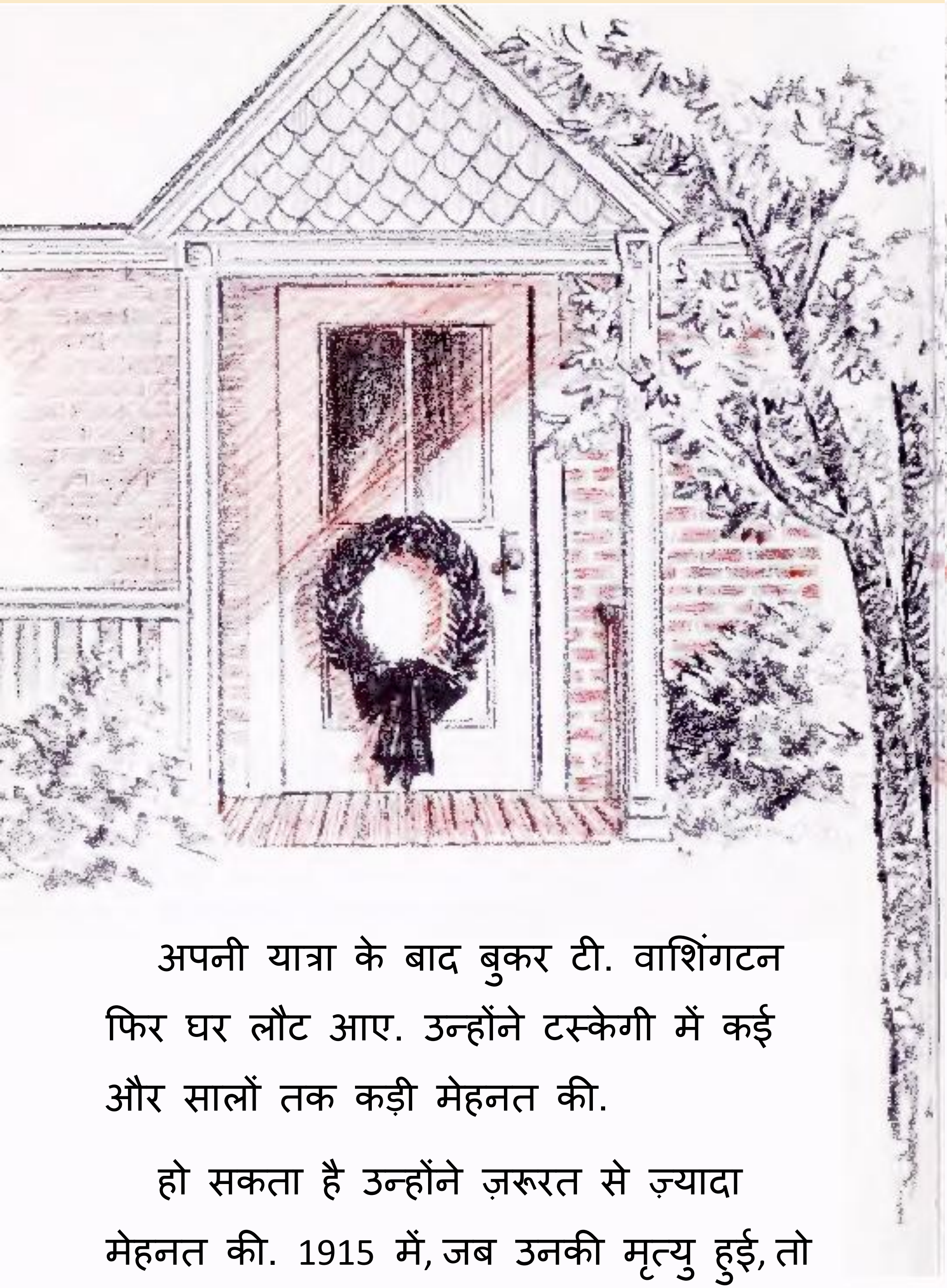

अपनी यात्रा के बाद बुकर टी. वाशिंगटन फिर घर लौट आए. उन्होंने टस्केगी में कई और सालों तक कड़ी मेहनत की.

हो सकता है उन्होंने ज़रूरत से ज़्यादा मेहनत की. 1915 में, जब उनकी मृत्यु हुई, तो कई लोगों ने सोचा कि उनकी मृत्यु ज़्यादा काम की वजह से हुई.

कोई भी इंसान हमेशा सबको खुश नहीं कर सकता. बुकर टी. वाशिंगटन भी सबको खुश नहीं कर पाए. उनकी मृत्यु के बाद, कुछ लोगों ने कहा कि टस्केगी इंस्टीट्यूट शायद उससे बेहतर स्कूल होता.

कुछ लोगों ने कहा कि बुकर टी. वाशिंगटन को कुछ ऐसी बातें भी सोचनी चाहिए थीं जो उन्होंने नहीं सोचीं. उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसी बातें करनी चाहिए थीं जो उन्होंने नहीं कीं.

हालांकि, ज़्यादातर लोगों ने कहा कि बुकर टी. वाशिंगटन एक महान व्यक्ति थे. उन्होंने टस्केगी में एक शानदार स्कूल बनवाया. उन्होंने अपने अश्वेत लोगों में से कई लोगों को गौरवान्वित किया था. ज़्यादातर लोग उन्हें इन्हीं बातों के लिए हमेशा याद रखेंगे. वे उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में याद रखेंगे जो एक गुलाम के रूप में पैदा हुए थे और जिन्होंनेअमेरिका के नीग्रो लोगों को गुलामी से मुक्त कराने में मदद की.

समाप्त